© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

भारत में उग्रवाद विरोधी अभियान मामले पर अध्ययन

डॉ दीप कुमार श्रीवास्तव

एसोसिएट प्रोफेसर , रक्षा अध्ययन विभाग

एसएम कॉलेज चंदौसी

सार

भारत में उग्रवाद विरोधी अभियान राष्ट्रीय सुरक्षा बनाए रखने और देश भर में विभिन्न विद्रोही खतरों से निपटने में महत्वपूर्ण रहे हैं। यह शोध तीन महत्वपूर्ण केस अध्ययनों पर प्रकाश डालता है: पंजाब में ऑपरेशन ब्लू स्टार, जम्मू और कश्मीर में उग्रवाद विरोधी प्रयास, और रेड कॉरिडोर में माओवादी विद्रोहियों के खिलाफ ऑपरेशन। इन केस अध्ययनों के माध्यम से, शोध नियोजित रणनीतियों, उनकी प्रभावशीलता और प्राप्त परिणामों की जांच करता है। मुख्य सबक तैयार किए गए हैं, जिसमें खुफिया जानकारी जुटाने, स्थानीय समर्थन हासिल करने और सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ सैन्य कार्रवाइयों को एकीकृत करने के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। शोध में मानवाधिकार संबंधी चिंताओं के साथ सुरक्षा उपायों को संतुलित करने में आने वाली चुनौतियों और लगातार राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता पर भी चर्चा की गई है। पिछले अनुभवों से सीखकर और उभरते खतरों को अपनाकर, भारत अपनी आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बढ़ा सकता है और स्थायी शांति और स्थिरता की दिशा में काम कर सकता है।

मुख्य शब्द: भारत, उग्रवाद, विरोधी, अभियान, राष्ट्रीय सुरक्षा इत्यादि ।

प्रस्तावना

भारत में राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने में आतंकवाद विरोधी (सीओआईएन) ऑपरेशन एक महत्वपूर्ण तत्व रहा है। देश के विविध और जटिल सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य ने विभिन्न विद्रोहों को जन्म दिया है, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएं और चुनौतियाँ हैं। उत्तर-पूर्व में अलगाववादी आंदोलनों से लेकर जम्मू-कश्मीर में लंबे समय से चले आ रहे संघर्ष और रेड कॉरिडोर में व्यापक माओवादी विद्रोह तक, भारत को कई आंतरिक सुरक्षा खतरों का सामना करना पड़ा है। इन विद्रोहों की उत्पत्ति का पता ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक कारकों से लगाया जा सकता है। अलगाववादी आंदोलन अक्सर जातीय और क्षेत्रीय पहचान के मुद्दों से उपजते हैं, जबकि माओवादी विद्रोह सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और राज्य के खिलाफ शिकायतों में गहराई से निहित है। दूसरी ओर, जम्मू और कश्मीर में विद्रोह क्षेत्रीय आकांक्षाओं, धार्मिक पहचान और सीमा पार आतंकवाद का एक जटिल अंतर्संबंध है।

भारत में विद्रोह का ऐतिहासिक संदर्भ

1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत को कई विद्रोहों का सामना करना पड़ा है, जिनमें से प्रत्येक की जड़ें अलग-अलग ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक संदर्भों में थीं। विद्रोहों को

मोटे तौर पर अलगाववादी आंदोलनों, जातीय संघर्ष और वामपंथी उग्रवाद में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारतीय राज्य द्वारा किए गए उग्रवाद विरोधी अभियानों का विश्लेषण करने के लिए इन विद्रोहों के ऐतिहासिक संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है।

अलगाववादी आंदोलन

- **जम्मू और कश्मीर**

जम्मू और कश्मीर में विद्रोह 1980 के दशक के अंत में शुरू हुआ और यह भारत में सबसे स्थायी और जटिल संघर्षों में से एक रहा है। संघर्ष की जड़ें 1947 में ब्रिटिश भारत के विभाजन में खोजी जा सकती हैं, जिसके कारण भारत और पाकिस्तान का निर्माण हुआ। जम्मू और कश्मीर की रियासत, अपनी मुस्लिम बहुल आबादी और हिंदू शासक के साथ, विवादास्पद परिस्थितियों में भारत में शामिल हो गई, जिससे भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद पैदा हो गया। दशकों से, इस क्षेत्र में सीमा पार आतंकवाद और शासन के प्रति आंतरिक असंतोष के कारण स्वतंत्रता या पाकिस्तान के साथ विलय की मांग देखी गई है।

- **उत्तर-पूर्वी भारत**

भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र, जिसमें नागालैंड, असम, मणिपुर और त्रिपुरा जैसे राज्य शामिल हैं, ने जातीय पहचान और स्वायत्तता या स्वतंत्रता की मांगों से प्रेरित कई विद्रोहों का अनुभव किया है। 1950 के दशक में शुरू हुआ नागा विद्रोह इस क्षेत्र के सबसे पुराने विद्रोहों में से एक है। नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नागालैंड (एनएससीएन) जैसे विभिन्न विद्रोही समूहों का गठन, एक अलग राष्ट्र के लिए नागा लोगों की आकांक्षाओं को दर्शाता है। इसी तरह, यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असोम (उल्फा) जैसे समूहों के नेतृत्व में असम में विद्रोह ने आर्थिक हाशिये पर जाने और जातीय पहचान के मुद्दों को संबोधित करने की मांग की है।

- **पंजाब**

1980 के दशक के दौरान पंजाब में विद्रोह मुख्य रूप से एक अलग सिख राज्य, खालिस्तान की मांग से प्रेरित था। जरनैल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व में आंदोलन को गति मिली, जिन्होंने आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों से संबंधित सिख शिकायतों का फायदा उठाया। विद्रोह के कारण व्यापक हिंसा हुई, जिसमें 1984 में ऑपरेशन ब्लू स्टार के बाद प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की हत्या भी शामिल थी, एक सैन्य अभियान जिसका उद्देश्य अमृतसर के स्वर्ण मंदिर से आतंकवादियों को बाहर निकालना था।

- **वामपंथी उग्रवाद**

माओवादी विद्रोह, जिसे नक्सलवाद भी कहा जाता है, मध्य और पूर्वी भारत में हाशिए पर रहने वाले समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और कृषि संकट में निहित है। यह आंदोलन 1967 में पश्चिम बंगाल के नक्सलबाड़ी में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के नेतृत्व में एक किसान विद्रोह के रूप में शुरू हुआ। दशकों में, विद्रोह अन्य राज्यों में फैल गया, जिससे तथाकथित "लाल गलियारा" बन गया। माओवादियों या नक्सलियों ने भारतीय राज्य

के खिलाफ हिंसक संघर्ष छेड़ रखा है, सुरक्षा बलों और बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया है, और भूमि सुधार और स्वदेशी समुदायों के अधिकारों की वकालत की है।

मामले का अध्ययन

ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984):

1980 के दशक के दौरान पंजाब में विद्रोह मुख्य रूप से एक अलग सिख राज्य, खालिस्तान की मांग से प्रेरित था। इस आंदोलन को जरनैल सिंह भिंडरावाले के नेतृत्व में गति मिली, जिन्होंने आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक मुद्दों से संबंधित सिख शिकायतों का फायदा उठाया। स्थिति तब बिगड़ गई जब भिंडरावाले और उसके अनुयायियों ने पवित्र सिख मंदिर स्वर्ण मंदिर के अंदर खुद को मजबूत कर लिया। जून 1984 में, भारत सरकार ने स्वर्ण मंदिर से आतंकवादियों को हटाने के उद्देश्य से एक सैन्य अभियान ऑपरेशन ब्लू स्टार शुरू किया। इस ऑपरेशन में भारतीय सेना ने मंदिर परिसर पर धावा बोल दिया, जिसके परिणामस्वरूप तीव्र लड़ाई हुई। हालांकि ऑपरेशन भिंडरावाले और उसके अनुयायियों को खत्म करने में सफल रहा, लेकिन इसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण संपार्श्विक क्षति हुई, जिसमें मंदिर के कुछ हिस्सों का विनाश और कई नागरिक हताहत शामिल थे। इस ऑपरेशन ने सिख भावनाओं को गहरी चोट पहुंचाई, जिसके कारण व्यापक विरोध प्रदर्शन और हिंसा हुई। उस वर्ष के अंत में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा हत्या का सीधा परिणाम था, जिससे देश भर में सिख विरोधी दंगे भड़क उठे। ऑपरेशन ने संवेदनशील स्थानों में संपार्श्विक क्षति को कम करने की आवश्यकता और सामाजिक दरारों को ठीक करने के लिए ऑपरेशन के बाद के सुलह प्रयासों के महत्व पर प्रकाश डाला।

जम्मू और कश्मीर में विद्रोह-विरोधी:

जम्मू और कश्मीर में विद्रोह 1980 के दशक के अंत में शुरू हुआ, जो आजादी की मांग से प्रेरित था और पाकिस्तान द्वारा समर्थित था। ब्रिटिश भारत के विभाजन और उसके बाद भारत और पाकिस्तान के बीच विवादों सहित क्षेत्र के जटिल इतिहास ने विद्रोह के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की। विद्रोहियों को बेअसर करने और सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए पिछले कुछ वर्षों में ऑपरेशन रक्षक और ऑपरेशन सर्प विनाश सहित विभिन्न ऑपरेशन चलाए गए हैं। इन अभियानों में सैन्य कार्रवाई, खुफिया जानकारी एकत्र करना और आतंकवाद विरोधी प्रयासों का संयोजन शामिल था। विद्रोह में हिंसा के स्तर में उतार-चढ़ाव देखा गया है, विद्रोही गतिविधियों को कम करने में महत्वपूर्ण सैन्य सफलताएँ मिली हैं। हालाँकि, सीमा पार आतंकवाद और स्थानीय अशांति से संबंधित चुनौतियों के साथ यह क्षेत्र अस्थिर बना हुआ है। राजनीतिक और आर्थिक उपायों के माध्यम से क्षेत्र को एकीकृत करने के प्रयासों के मिश्रित परिणाम आए हैं। जम्मू और कश्मीर में उग्रवाद विरोधी प्रयास विकास पहलों और निष्पक्ष शासन के माध्यम से स्थानीय आबादी के दिल और दिमाग को जीतने, घुसपैठ को रोकने के लिए सख्त सीमा नियंत्रण बनाए रखने और मूल कारणों को संबोधित करने के लिए निरंतर दीर्घकालिक प्रयासों में संलग्न होने के महत्व पर जोर देते हैं। विद्रोह का.

लाल गलियारे में माओवादी विरोधी अभियान:

माओवादी विद्रोह, जिसे नक्सलवाद भी कहा जाता है, मध्य और पूर्वी भारत के कई राज्यों को प्रभावित करता है। यह सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और हाशिए पर रहने वाले समुदायों, विशेषकर आदिवासी आबादी की शिकायतों से प्रेरित है। माओवादी विद्रोहियों से निपटने के लिए ग्रीन हंट और समाधान जैसे ऑपरेशन शुरू किए गए हैं, जिसमें माओवादी गढ़ों और बुनियादी ढांचे को नष्ट करने के लिए केंद्रीय और राज्य पुलिस बलों, अर्धसैनिक इकाइयों और खुफिया एजेंसियों के समन्वित प्रयास शामिल हैं। इन कार्रवाइयों के मिश्रित परिणाम आए हैं, कुछ क्षेत्रों में विद्रोही गतिविधि कम देखी गई है जबकि अन्य क्षेत्र अस्थिर बने हुए हैं। कई क्षेत्रों में विद्रोह कमजोर हो गया है, लेकिन अंतर्निहित सामाजिक-आर्थिक मुद्दे बने हुए हैं, जिससे विद्रोही आंदोलन कायम है। माओवादी विरोधी अभियान एक एकीकृत दृष्टिकोण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं जो उग्रवाद के मूल कारणों को संबोधित करने के लिए सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ सुरक्षा उपायों को जोड़ता है। स्थानीय समुदायों को शामिल करना, समावेशी विकास नीतियों के माध्यम से उनकी शिकायतों का समाधान करना और स्थानीय कानून प्रवर्तन और प्रशासनिक एजेंसियों की क्षमता को मजबूत करना रेड कॉरिडोर में दीर्घकालिक स्थिरता प्राप्त करने के लिए आवश्यक रणनीतियाँ हैं।

उग्रवाद विरोधी अभियानों में प्रमुख रणनीतियाँ

- **खुफिया जानकारी एकत्र करना**: विद्रोही गतिविधियों को रोकने और विद्रोही नेतृत्व को लक्षित करने के लिए प्रभावी खुफिया जानकारी महत्वपूर्ण है।
- **दिल और दिमाग का दृष्टिकोण**: विकास पहल और निष्पक्ष शासन के माध्यम से स्थानीय आबादी का समर्थन जीतना।
- **सैन्य रणनीति**: विशेष आतंकवाद विरोधी इकाइयों का उपयोग और स्थानीय इलाके और विद्रोही रणनीति के अनुकूल रणनीति अपनाना।
- **एजेंसियों के बीच समन्वय**: एकीकृत दृष्टिकोण सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों और राज्य सरकारों के बीच निर्बाध समन्वय।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग**: सीमा पार विद्रोह और आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए पड़ोसी देशों के साथ सहयोग।

निष्कर्ष

भारत में उग्रवाद विरोधी अभियानों ने विभिन्न विद्रोही समूहों द्वारा उत्पन्न विविध और जटिल खतरों से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऑपरेशन ब्लू स्टार, जम्मू-कश्मीर में उग्रवाद विरोधी और रेड कॉरिडोर में माओवादी विद्रोह के मामले के अध्ययन इन चुनौतियों की बहुमुखी प्रकृति और उनसे निपटने के लिए अपनाई गई रणनीतियों को दर्शाते हैं। इन ऑपरेशनों से सीखे गए मुख्य सबक में संपार्श्विक क्षति को कम करने की आवश्यकता, ऑपरेशन के बाद सुलह का महत्व और स्थानीय समर्थन जीतने के लिए दिल और दिमाग के दृष्टिकोण की आवश्यकता शामिल है। प्रभावी खुफिया जानकारी

एकत्र करना, सख्त सीमा नियंत्रण और सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ सैन्य कार्रवाइयों को एकीकृत करना सफल COIN रणनीतियों के महत्वपूर्ण घटक हैं। हालाँकि, ये ऑपरेशन महत्वपूर्ण चुनौतियों को भी उजागर करते हैं, जैसे सुरक्षा आवश्यकताओं के साथ मानवाधिकार संबंधी चिंताओं को संतुलित करना, लगातार राजनीतिक समर्थन सुनिश्चित करना और विद्रोह को बढ़ावा देने वाली अंतर्निहित सामाजिक-आर्थिक शिकायतों को संबोधित करना। भारत के विद्रोहों की जटिलता के लिए एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो सैन्य, राजनीतिक और विकासात्मक प्रयासों को जोड़ती है। पिछले अनुभवों से सीखकर और विद्रोही खतरों की उभरती प्रकृति के अनुसार रणनीतियों को लगातार अपनाकर, भारत अपनी आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बढ़ा सकता है और प्रभावित क्षेत्रों में स्थायी शांति और स्थिरता प्राप्त करने की दिशा में काम कर सकता है। COIN संचालन की स्थायी सफलता और राष्ट्र की समग्र सुरक्षा के लिए इन चुनौतियों का समाधान आवश्यक है।

ग्रन्थ सूची

1. बनर्जी, एस. (2009). नक्सलबाड़ी और उसके बाद: एक फ्रंटियर एंथोलॉजी। कोलकाता: सेतु प्रकाशनी.
2. गिल, के.पी.एस. (1997)। पंजाब: सतत शांति की पहेली। नई दिल्ली: हर-आनंद प्रकाशन।
3. गोखले, एन.ए. (2009)। श्रीलंका: युद्ध से शांति तक. नई दिल्ली: हर-आनंद प्रकाशन।
4. गुप्ता, के.आर. (2006)। विश्व मामलों में अध्ययन: दक्षिण एशिया। नई दिल्ली: अटलांटिक प्रकाशक और वितरक।
5. हुसैन, एस. (2003). कश्मीर: द अनटोल्ड स्टोरी। नई दिल्ली: द बुक रिव्यू लिटरेरी ट्रस्ट।
6. जयदेव, जी. (2003)। आतंकवाद निरोध: भारतीय अनुभव। नई दिल्ली: सेज प्रकाशन।
7. जोशी, एम. (1999)। द लॉस्ट रिबेलियन: नब्बे के दशक में कश्मीर। नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
8. कुमार, आर. (2008). भारत के माओवादियों को समझना: संदर्भ, चुनौतियाँ, और आतंकवाद विरोधी रणनीति। नई दिल्ली: शांति और संघर्ष अध्ययन संस्थान।
9. प्रकाश, वी. (2008)। भारत की आंतरिक सुरक्षा: वास्तविक खतरे। नई दिल्ली: के डब्ल्यू पब्लिशर्स प्रा. लिमिटेड
10. सिंह, के. (2007)। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा: वार्षिक समीक्षा। नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया।